कलम की सुगंध
अर्णव कलश एसोसिएशन

कुण्डलियाँ

लक्षित

राधा तिवारी 'राधेगोपाल'

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

लक्षिता

(कलम की सुगंध छंदशाला)

राधा तिवारी "राधेगोपाल"

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-226-5
संपादक- अनिता मंदिलवार "सपना"
आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- प्रीति समकित सुराना, 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, राधा तिवारी "राधेगोपाल"
मूल्य- 90.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY RADHA TIWARI RADHEGOPAL
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

समीक्षा

राधा जैसी चासनी, बनी गुणों की खान।।
बोली मीठी मधु लगे,कहते सभी महान।।

जिंदगी खुशियों से भरी पथ पर चलकर आज कविताओं की पगडंडियों में कुण्डलियाँ की बाग में खुशबू बिखेरने को उतावली श्रीमती राधा तिवारी "राधेगोपाल" जो पेशे से अंग्रेजी साहित्य की शिक्षिका हैं पर हिंदी की सेवा में तत्पर हो अपनी क्षमता और अपनी लेखनी की ताकत को साहित्य की नगरी में अपनी कलम की ताकत को पन्नों में यूँ रखती है निशचय पाठक उनकी लेखन शैली से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाएंगे। मुझे विश्वास है कि आपकी लेखन शैली को सराहा जायेगा और आप उसपर खरी उतरेंगी। आप हमेशा होशियार रही आपको कई पुरस्कार मिले है "साहित्य श्री, ब्लॉग श्री, युवा प्रतिभा सम्मान, दोहा विशारद, साहित्य कुमुद सम्मान, दोहा रत्न, दोहा सृजक कलम सम्मान, कलम काव्य, गौरव काव्य कलश, अल मंसूर सम्मान "हौसलों कि उड़ान 2020" और भी विभिन्न सम्मान आदि। इसके अलावा आप ब्लॉग, फेसबुक और सोशल मीडिया पर भी सक्रीय रहती हैं और आपका राधे का संसार नाम से ब्लॉग चलता है।

आपकी प्रकाशित पुस्तक अनेक है "सृजन कुंज, जीवन का भूगोल, राधे कि अंजुमन, राधे कि कुण्डलियाँ इनके अलावा "साझा संग्रह" ये दोहे बोलते हैं, हाइकु साझा संग्रह, ये कुण्डलियाँ बोलती है. नव सप्तक काव्य संग्रह आदि। आप गीत गजल, कविता, भजन, मुक्तक, दोहा लिखने मे माहिर है। प्रकाशाधीन 8 पुस्तकें

आप महान कवयित्री है देश मे आपके नाम की चर्चे होते है। आप ज्ञान की खान हैं। कुण्डलियाँ की आपकी ये दूसरी पुस्तक "लक्षिता" निकल रही है इसके लिए आप को ढेरों शुभकानाएं। आपकी प्रतिभा आपकी कुण्डलियाँ मे दिखाई देती है। गाडी का टायर में, सडकों का हाल, मजदूरी, धन दौलत मे आपने माता पिता के मान सम्मान को आगे रखा। बिटिया मे पढने लिखने की बातें की,सुख दुख, क्रोध में मद लोभ से दूर रहने का संदेश दिया, आपने पशु, चींटी से लेकर ईश्वर तक के बिषय लेकर रचनाओं मे बात रखीजो काफी सराहनीय है। आपके शब्द चयन आपकी क्षमता को दर्शाते है। आप एक महान कवयित्री है आप लय ताल और रहस्यो की गुढता की अपार परख रखती है। आपकी लेखनी सच कहने से चूकती नही जो एक उत्कृष्ट लेखिका की पहचान है। आज संसार मे जहाँ अपनेलिये सुख भोग मे लिप्त है वही आप साहित्य साधना कर समाज सेवा मे लगी है आपकी लेखनी को मै नमन करती हुँ । आप सदा इसी तरह साहित्य साधना मे डुबी रहें और आपकी लेखनी चलती रहे।

करो सदा सेवा यहाँ, बनकर रचनाकार।।
रचना तुम रचती रहो,सबको हो स्वीकार।।
गढो सदा इतिहास जी, तुम राधे गोपाल।।
बनके मीरा सी लगो, लिखो जगत का हाल।।

इन्ही ढेरो शुभकामनाओं के साथ
आपकी अपनी
धनेश्वरी सोनी 'गुल' बिलासपुर
छत्तीसगढ़।

शुभकामना संदेश

किसी भी भाई के लिए यह गर्व की बात है कि उनकी बहन किसी भी क्षेत्र में अपना नाम रोशन करें। जी हाँ मैं अपनी छोटी बहन राधा तिवारी जो "राधेगोपाल" के नाम से साहित्य के क्षेत्र में मशहूर है की बात कर रहा हूँ ।राधा तिवारी"राधेगोपाल" एक आशु कवियत्री हैं और अपने जीवन के हर क्षण को यह अपनी रचनाओं में उतारती रहती है। आपकी रचनाएँ अक्सर मुझे पढ़ने को मिलती है और आज यह जानकर मुझे अति प्रसन्नता हो रही है कि जीवन का भूगोल (दोहा संग्रह), सृजन कुंज (काव्य संग्रह), राधे की अंजुमन (ग़ज़ल संग्रह) और राधे की कुंडलियाँ (कुंडलियाँ संग्रह) के बाद अब आपका एक और संग्रह "लक्षिता" (कुंडलियाँ संग्रह) प्रकाशित हो रहा है। मैं आपके इस संग्रह के शीघ्र प्रकाशित होने के लिए शुभकामनाएं देता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आपकी लेखनी निरंतर चलती रहे और आप लेखन के क्षेत्र में नए नए सोपान चढ़ती रहो ।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

02/02/2020

डॉ जगदीश चंद्र पांडेय

जोधपुर (राजस्थान)

(बैचलर ऑफ युनानी मेडिसिन एंड सर्जरी, डॉक्टर ऑफ नेचुरोपैथी, डॉक्टर ऑफ़ योग, पूर्व आयुष चिकित्सा अधिकारी)

कवयित्री की कलम से

मेरे लिए यह बड़े हर्ष का विषय है की आज अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन के माध्यम से मेरा द्वितीय छंद बद्ध संग्रह जिसमें 100 कुण्डलियाँ सम्मिलित की गई हैं प्रकाशित हो रही है “लक्षिता"।

लिखने का शौक तो मुझे बचपन से ही था द्वितीय कक्षा में पढ़ते हुए ही मैंने लिखना शुरू कर दिया था हालांकि मैं बचपन से ही इंग्लिश मीडियम स्कूल में पढ़ी हुई हूँ लेकिन हिंदी के प्रति एक लगाव था मेरे साथ में जिसने मुझे कभी नहीं छोड़ा और लेखन के क्षेत्र में मैं आगे बढ़ने लगी। कई पुस्तकों के प्रकाशन के बाद आज "लक्षिता" नाम से मेरी यह कुंडलियों की पुस्तक प्रकाशित हो रही है।

2 फरवरी 2020 को मेरी बेटी श्रीमती स्वाति भट्ट और दामाद डॉ गौरव भट्ट को कन्या रत्न की प्राप्ति हुई। ऐसा लगा जैसे घर में लक्ष्मी स्वयं चल कर आ गई है और तभी मेरी सौ कुंडलियाँ भी पूरी हुई और मैंने अपनी इस पुस्तक को अपनी नातिनी "लक्षिता" के नाम पर रखने का विचार बनाया।

बात मैंने अपने पति गोपाल दत्त तिवारी और पुत्र युगल तिवारी के सामने रखी और उन्होंने भी सहर्ष स्वीकार कर लिया और आज मेरी यह पुस्तिक "लक्षिता" आप सबके सामने है ।

"लक्षिता" अनंत ऊँचाइयो को छुए। इस संग्रह के लिए मैं अपने पारिवारिक सदयों की आभारी हूँ ।

आदरणीय संजय कौशिक विज्ञात जी और श्रीमती अनीता मंदिलवार जी का विशेष रूप से आभार प्रकट करती हूँ जो हमारे लिए पथ प्रदर्शक बनकर आए और आज मेरी कुंडलियाँ की पुस्तक "लक्षिता" प्रकाशित हो रही है। सबके सहयोग के बिना ये मुमकिन नहीं था। उस पुस्तक की समीक्षा लिखने के लिए मैं श्रीमती धनेश्वरी सोनी "गुल" बिलासपुर छत्तीसगढ़ की विशेष आभारी हूँ।

राधा तिवारी "राधेगोपाल"

समर्पण

में अपनी इस कुण्डलियाँ पर आधारित पुस्तक

“लक्षिता”

मेरे दामाद

“डॉ गौरव भट्ट” और बेटी “स्वाति भट्ट”

को समर्पित करती हूँ।

1
वीणाधारी

वीणाधारी मातु है, विद्या का आधार।
माँ से राधे कर रही, हाथ जोड़ मनुहार।।
हाथ जोड़ मनुहार, खुशी सब पर बरसाना।
भरो सभी में मातु, सदा तुम ज्ञान खज़ाना।।
कह राधेगोपाल, मधुर है तान तुम्हारी।
बच्चे आए द्वार, दर्श दो वीणाधारी।।

2
गोरी

गोरी कब से कर रही, पिया मिलन की आस।
हाथों में कंगन नहीं, पड़ी है गगरी पास।।
पड़ी है गगरी पास, सोच अब उसे सताती।
पायल उसकी आज, अरे अब क्या समझाती।।
कह राधेगोपाल, नजर की करती चोरी।
झुका नज़र को आज, सभी को देखे गोरी।।

3
यादें

यादें बिटिया की करे, माता को हलकान।
माता बनना जगत में, समझो मत आसान।।
समझो मत आसान, करे वो सब पर छाया।
रखती उसका ध्यान, अरे जो गोदी आया।।
कह राधेगोपाल, भली बच्चों की बातें।
माता को हलकान, करें बिटिया की यादें।।

4

छोटी-छोटी बात

छोटी-छोटी बात को, देना मत तुम तूल।
रिश्ते रखने के लिए, कुछ बातों को भूल।।
कुछ बातों को भूल, सभी से विनती मेरी।
करने सबको माफ, कभी करना मत देरी।।
कह राधेगोपाल, करो मत बातें खोटी।
देना मत तुम तूल, कभी बातों को छोटी।।

5

मुरली तान

सुनकर मुरली तान को, राधा है बेचैन।
मोहन को ही खोजते, अब उसके दो नैन।।
अब उसके दो नैन, हृदय आल्हादित होता।
मोहन दिन अरु रात, अरे राधा में खोता।।
कह राधेगोपाल, सुनहरे सपने बुनकर।
राधा है बेचैन, तान मुरली की सुनकर।।

6

अबला

नारी अब अबला नहीं, उस पर सबको नाज।
वो तो नित ही कर रही, जग के सारे काज।।
जग के सारे काज, उसे है बहुत लुभाते।
करती नए विचार, सदा ही आते जाते।।
कह राधेगोपाल, अरे वो सब पे भारी।
जग में करती राज, अरे बन सबला नारी।।

7
आशा अरु विश्वास

आशा अरु विश्वास पे, टिका हुआ संसार।
करना अपने मीत से, सदा कुशल व्यवहार।।
सदा कुशल व्यवहार, कभी भी दिल ना तोड़ो।
करने अच्छे काम, सदा ही खुद को मोड़ो।।
कह राधेगोपाल, करो मत कभी तमाशा।
जीवन हो खुशहाल, ईश से करना आशा।।

8
काज

उड़ना चाहते हैं सभी, बिना पंख के आज।
सपने में ही कर रहे, हैं सब अपने काज।।
हैं सब अपने काज, कभी धरती मत छोड़ो।
आ जाओ तुम बाज, मीत से मुख मत मोड़ो।।
कह राधेगोपाल, नहीं है अच्छा मुड़ना।
बिना पंख के आज, सभी चाहे हैं उड़ना।।

9
हिंद की शान

करते हैं जो देश पर, जीवन को कुर्बान।
उनका तो बलिदान ही, बने हिंद की शान।।
बने हिंद की शान, चमकते बनकर तारे।
करें देशहित काम, हमारे बच्चे प्यारे।।
कह राधेगोपाल, देश पर जो है मरते।
जीवन को कुर्बान, देश पर वो ही करते।।

10

हरि नाम

लेने को हरी नाम है, देने को तो दान।
दोनों हाथों दीजिए, पाओगे वरदान।।
पाओगे वरदान, खुशी से तुम तो जग में।
शूल कभी ना चुभें, अरे यूँ तेरे पग में।।
कह राधेगोपाल, प्रभु है तत्पर देने।
बढा खुशी से आंचल, तू भी जो है लेने।।

11

आया है अब बाग में

आया है अब बाग में, शीतल मृदुल बसंत।
मेरे तो परदेस को, गए हुए हैं कंत।।
गए हुए हैं कंत, न जाने कब आएंगे।
मुझको ये मधुमास, सखी कैसे भाएंगे।।
कह राधेगोपाल, मुझे तो कुछ ना भाया।
शीतल मृदुल बसंत, धरा पर जब से आया।।

12

निडर

निडर होकर के चले, देखो यह शैतान।
सोच रहा कैसे करूं, इनको मैं हल्कान।।
इनको मैं हल्कान, अरे वो सोच विचारे।
रोकूं उसका हाथ, नियम से सांझ सखारे।।
कह राधेगोपाल, बनो मत तुम यूँ लीडर।
लाकर के व्यवधान, चलो मत बन कर निडर।।

13

माखन चोर

नटखट सी है राधिका, चंचल उसके नैन।
उसको जब न देखते, कृष्ण रहें बेचैन।।
कृष्ण रहें बेचैन, बजाते मुरली प्यारी।
राधा के बिन नहीं, सुहाती दुनियादारी।।
कह राधेगोपाल, ग्वाल होते हैं चटपट।
वो है माखन चोर, राधिका तो है नटखट।।

14

वंदन

वंदन है गुरुदेव का, रखूँ चरण में शीश।
गुरुदेव देना मुझे, अपना शुभ आशीष।।
अपना शुभ आशीष, रहूँ में प्यारी बनकर।
रहकर मद से दूर, अकड़ में कभी न तनकर।।
कह राधेगोपाल, माथ पे लगा के चंदन।
खुश हो करके करूं, जगत में सबका वंदन।।

15

बाधा

बाधा आती राह में, उनसे लड़ना सीख।
मेहनत करते ही रहो, माँगो मत तुम भीख।।
माँगों मत तुम भीख, कभी मत हाथ बढ़ाना।
पढ़ने को ही अरे, जगत में कदम बढ़ाना।।
कह राधेगोपाल, राह मैंने यूँ साधा।
सोच समझकर यहाँ, दूर करती हूँ बाधा।।

16

सैनिक

सैनिक बनकर देश की, रक्षा करते आप।
सहकर गरमी शीत को, रहते हो तैनात।।
रहते हो तैनात, देखते बर्फ पिघलती।
दुश्मन की तोपों से, गोली नित ही निकलती।।
कह राधेगोपाल, यही तो काम है दैनिक।
सीमा पर है खड़े, हमारे कितने सैनिक।।

17

राधे की मुस्कान

मोहक मनभावन सरल, राधे की मुस्कान।
जग में सबको दे रही, यह कितना सम्मान।।
यह कितना सम्मान, देखकर सभी लुभाते।
खुश होकर के अरे, सभी तो पास में आते।।
कह राधेगोपाल, बनी खुशियों की दोहक।
राधा की मुस्कान, लगे सबको मनमोहक।।

18

होकर बेबस घूमता

होकर बेबस घूमता, धरती पर इंसान।
चला बनाने स्वयं को, सबका वो भगवान।।
सबका वो भगवान, सभी पर धाक जमाता।
बना दया का पात्र, अरे पर कुछ ना आता।।
कह राधेगोपाल, जगत में सब कुछ खोकर।
रहता है इंसान, यहाँ पर बेबस होकर।।

19

नमन

करलें वंदन आपका, गुरुवर शत शत बार।
आप यहाँ हरदम बने, दोहों के आधार।।
दोहों के आधार, सत्यता हमें बताते।
सबकी सुनते बात, किसी को नहीं सताते।।
कह राधेगोपाल, सभी के दुखड़े हरलें।
मात पिता के साथ, गुरु का वंदन करलें।।

20

भूखे को रोटी

भूखे को रोटी मिले, प्यासे को जब नीर।
तब समझो सबकी यहाँ, दूर हुई है पीर।।
दूर हुई है पीर, गरीबी तो है भारी।
करते कितना काम, मुसीबत कितनी सारी।।
कह राधेगोपाल, बदन भी उनका सूखे।
भोजन का दो दान, अगर देखोगे भूखे।।

21

बालक

बालक रोता ही रहा, मातु गई है काम।
भूख लगी उसको बहुत, भूला माँ का नाम।।
भूला माँ का नाम, सभी तो कारण पूछे।
भीगा उसका गात, अरे कुछ भी न सूझे।।
कह राधेगोपाल, सभी का ईश्वर पालक।
रोता है दिन रैन, अरे निर्धन का बालक।।

22

मात-पिता

छोड़ो मत तुम इस तरह, अपने पितु अरु मात।
उमर बढ़े तब तो यहाँ, सबका सूखे गात।।
सबका सूखे गात, नहीं है ये लाचारी।
मात-पिता ने हाय, दिखाई दुनिया सारी।।
कह राधेगोपाल, नहीं तुम मुँह को मोड़ो।
वृद्ध हुए पितु-मात, कभी मत उनको छोड़ो।।

23

माँ के जैसी

जैसी माँ वैसी नहीं, जग में कोई और।
माँ के बिन मिलती नहीं, किसी गोद में ठौर।।
किसी गोद में ठौर, यही ममता की मूरत।
ईश्वर जैसी दिखे, अरे माता की सूरत।।
कह राधेगोपाल, मिलेगी ऐसी वैसी।
मिलती गोदी नहीं, कभी माता के जैसी।।

24

जलता

जलता परहित के लिए, रोज यहाँ हर रात।
उस दीपक की मिल रही, सबको ही सौगात।।
सबको ही सौगात, उजाला वह है करता।
करें तमस को दूर, सभी में जोश है भरता।।
कह राधेगोपाल, नहीं वह हमको खलता।
दीपक सारी रात, सदा जल जलकर जलता।।

25

झाड़ू से वार

बेटी हो सकती नहीं, इतनी भी लाचार।
झाड़ू से जो मातु पर, कर देती है वार।।
कर देती है वार, अरे जो केश भी खींचे।
दिखा दिखा कर आँख, अरे वह मुँह भी भींचें।।
कह राधेगोपाल, बलैयाँ माँ की लेती।
अरे दिखाके आँख, नहीं लड़ती है बेटी।।

26

बात पते की

कहती हूँ मैं आपसे, बात पते की आज।
आप समय को कीजिए, अपने सारे काज।।
अपने सारे काज, समय बढ़ता ही जाए।
बैठ करे आराम, यहाँ वो कुछ न पाए।।
कह राधेगोपाल, नदी तो हर पल बहती।
पल-पल का उपयोग, करो राधे है कहती।।

27

तिनके

तिनके तिनके जोड़कर, बया बनाती नीड़।
प्रियतम जब भी साथ हैं, नहीं दिखे तब पीड़।।
नहीं दिखे तब पीड़, अरे वो झाँके अंदर।
नीड़ हुआ तैयार, वहाँ से देखे बंदर।।
कह राधेगोपाल, ला रही दाना बिनके।
नीड़ बनाती आज, जोड़कर तिनके तिनके।।

28

चुपके से

चुपके से धक्का दिया, लिया पर्स को लूट।
एक अकेली नार पर, गया दरिंदा टूट।।
गया दरिंदा टूट, जगह थी वह सुनसानी।
अबला समझा अरे, मगर वो निकली नानी।।
कह राधेगोपाल, कहाँ पर वो अब दुबके।
मारेगी अब लात, देख मत उसको चुपके।।

29

बेटियाँ

पलती है अब बेटियाँ, करती कितने काम।
चली अकेली राह में, उसे बचाओ राम।।
उसे बचाओ राम, दरिंदा पीछे आया।
हाथ दिखाया हाय, मगर वो झपट न पाया।।
कह राधेगोपाल, ध्यान से वो है चलती।
मिला पिता का राज, शान से वो है पलती।।

30

कारीगर

कारीगर हूँ मैं यहाँ, तुम सब मेरे मीत।
शब्दों को मैं जोड़कर, बना रही हूँ गीत।।
बना रही हूँ गीत, देख कर दुनिया सारी।
लिखूँ कविता बाल, ग़ज़ल दोहे मनुहारी।।
कह राधेगोपाल, नहीं बनती बाजीगर।
रचके दोहे गीत, बनी हूँ मैं कारीगर।।

31

कागा

कागा पर चढ़ता नहीं, कभी दूसरा रंग।
दिखे नहीं है दूसरा, पक्षी उसके संग।।
पक्षी उसके संग, चोंच से मार भगाता।
कभी किसी का साथ, नहीं वो कभी निभाता।।
कह राधेगोपाल, छीन कर रोटी भागा।
कोयल गाती गीत, काँव करता है कागा।।

32

जीवन

जीवन में हरदम मनुज, सबसे मीठा बोल।
कटुक वचन को छोड़कर, मुँह में मिश्री घोल।।
मुँह में मिश्री घोल, मोल तुम इसका जानो।
करना मीठी बात, कहा मेरा भी मानो।।
कह राधेगोपाल, बनो सब का संजीवन।
करके मीठी बात, मनुज जी लो तुम जीवन।।

33

आँसू

आँसू को माँ पौंछ दूँ, मैं बालक नादान।
तुझको रोता देखकर, मैं होता हलकान।।
मैं होता हलकान, करो माँ बातें मुझसे।
हँसकर मेरे साथ, दूर रह लेना गम से।।
कह राधेगोपाल, बोलती क्यों हो सासु।
रोती माँ को देख, पौछता बच्चा आँसू।।

34
छोटी

छोटी बहना बोलती, दीदी आओ पास।
मुझको करनी आज है, तुमसे बातें खास।।
तुमसे बातें खास, पिताजी जब भी आते।
रहते घर में रात, सुबह को जल्दी जाते।।
कह राधेगोपाल, मिलेगी सबको रोटी।
करते हरदम काम, पिताजी मोटी छोटी।।

35
हरेला

मने हरेला पर्व है, हरदम श्रावण मास।
भोले जी पूरी करें, सबके मन की आस।।
सबके मन की आस, धतूरा भाँग चढ़ाओ।
जल का कर अभिषेक, मान जग में तुम पाओ।।
कह राधेगोपाल, चढ़ा दो तुम भी केला।
श्रावण के ही मास, मनाते पर्व हरेला।।

36
अभिषेक

शंकर के हर काम तो, जग में होते नेक।
शिवलिंग पर कर दीजिए, तुम जल से अभिषेक।।
तुम जल से अभिषेक, काम होगा सब पूरा।
सोचा है जो काम, रहे न कभी अधूरा।।
कह राधेगोपाल, दूर हो काँटा कंकर।
जपा जगत में नाम, सदा ही जिसने शंकर।।

37

समय

बीता पल पल पल दिवस, देखो पूरा साल।
जीवन में हर दम रहो, बच्चों तुम खुशहाल।।
बच्चों तुम खुशहाल, लगे ये दुनिया प्यारी।
करना ऐसे काम, लगे सबको मनुहारी।।
कह राधेगोपाल, लीजिए सेब पपीता।
सुई समय की कहती, टिक टिक समय है बीता।।

38

जन्म दिवस

आया है आता रहे, जन्म दिवस हर साल।
राधे कहती आपको, रहो सदा खुशहाल।।
रहो सदा खुशहाल, मनाओ हरपल होली।
जियो हजारों साल, करो तुम हँसी ठिठोली।।
कह राधेगोपाल, निरोगी हो ये काया।
खुशी मिली है आज, दिवस ये शुभ है आया।।

39

बरसाने की राधिका

बरसाने की राधिका, गोकुल का गोपाल।
सबको प्यारा लग रहा, हर दम ही नंदलाल।।
हर दम ही नंदलाल, दही की मटकी फोड़े।
खींचे हरदम चीर, बाँह राधा की मोड़े।।
कह राधेगोपाल, बने हो क्यों अनजाने।
चलो देखने आज, राधिका को बरसाने।।

40

राधे राधे

राधे को तो मिल गई, होली की सौगात।
गुजिया पापड़ खा लिए, और हो गई बात।।
और हो गई बात, हाथ अब नहीं मिलाना।
बोतल छोड़ो अरे, भांग तुम नहीं पिलाना।।
कह राधेगोपाल, मिलो तुम हमसे आधे।
कोरोना से कहो, दूर से राधे राधे।।

41

दुआ

दुआ सभी की है यही, मत होना गमगीन।
जल्द चलोगे आप भी, रोग नहीं संगीन।।
रोग नहीं संगीन, समय की है लाचारी।
चलना करना बंद, बोलते सब नर नारी।।
कह राधेगोपाल, अरे कुछ नहीं हुआ है।
सब मिलकर के करें, ईश से यही दुआ है।।

42

होली

होली में जब आ गई, बिन मौसम बरसात।
बिना रंग के भीगते, देखो सबके गात।।
देखो सबके गात, रंग जब उन्हें लगाया।
आकर बारिश ने तो, सारा रंग बहाया।।
कह राधेगोपाल, हथेली सबसे बोली।
छुपा मुझी में रंग, खेल लो छुपकर होली।।

43

कोरोना रोग

कोरोना से डर रहा, है जग सारा आज।
ध्यान सभी अपना रखो, आएगा ये बाज।।
आएगा ये बाज, हाथ को जोड़ो हरदम।
हाथों को रख साफ, मिटेगा इसका दमखम।।
कह राधेगोपाल, अकेले तुम तो सोना।
आएगा नहीं पास, तुम्हारे तो कोरोना।।

44

विदेशी रोग

करता सब पर राज है, एक विदेशी रोग।
डरे डरे से हैं सभी, सब भारत के लोग।।
सब भारत के लोग, आ रही इसमें खाँसी।
दम घुटता है यहाँ, लगे ज्यों लगी है फाँसी।।
कह राधेगोपाल, भीड़ से ये है सरता।
एक विदेशी रोग, राज सबपे क्यों करता।।

45

खाँसी

खाँसी जब आने लगे, मुँह पर रखो रुमाल।
ठंडे से परहेज कर, मत रख कभी मलाल।।
मत रख कभी मलाल, चाय अदरक की पीना।
खुली हवा लो आप, जिंदगी हँस के जीना।।
कह राधेगोपाल, रोग ये लाता फाँसी।
रखना पास रुमाल, जब भी आए खाँसी।।

46

कोरोना

कोरोना के नाम से, आया कैसा रोग।
सहमे सहमे से दिखे, अब तो सारे लोग।।
अब तो सारे लोग, घूमने जब हैं जाते।
भीड़ भाड़ से बच कर, सीधा घर को आते।।
कह राधेगोपाल, होगा वही जो होना।
रहो अकेले आप, दूर होगा कोरोना।।

47

माँसाहार

खाते माँसाहार को, खुश होकर जो लोग।
उनके आता पास में, कोरोना का रोग।।
कोरोना का रोग, बड़ा ही है भयशाली।
खाँसी आती अरे, गले में खर खर वाली।।
कह राधेगोपाल, छूट वो कभी न पाते।
जो भी माँसाहार, जगत में हरदम खाते।।

48

नारी

नारी हर एक मोड़ पर, देती है बलिदान।
कभी मिला सम्मान तो, कभी हुआ अपमान।।
कभी हुआ अपमान, लगे ये जीवन भारी।
कभी लगे वरदान, कभी यह तीखी आरी।।
कह राधेगोपाल, काम तो रहता जारी।
करती कितने काम, धाम में कोमल नारी।।

49

अभिवादन

अभिवादन कर लीजिए, हाथ जोड़कर आप।
धूप जलाकर के करें, घर में पूजा जाप।।
घर में पूजा जाप, दूर होगी बीमारी।
शाकाहारी रहे, अगर ये दुनिया सारी।।
कह राधेगोपाल, खुशी का लो रसवादन।
हाथ जोड़कर आप, करो सबका अभिवाद।।

50

चींटी

करती है श्रम रात दिन, चींटी की क्या बात।
कभी आप थकना नहीं, समझ लीजिए आप।।
समझ लीजिए आप, हाथ में काठ उठाया।
रख पत्थर पर पैर, अरे खुद को समझाया।।
कह राधेगोपाल, अकेले पीड़ा हरती।
समझ लीजिए आप, अरे श्रम चींटी करती।।

51

माटी की देह

जलकर काया भस्म है, थी माटी की देह।
जीवित रहने के लिए, खाते हैं अवलेह।।
खाते हैं अवलेह, पी रहे हैं गंगाजल।
खबर नहीं है यार, अरे क्या होगा प्रतिपल।।
कह राधेगोपाल, रहो आपस में मिलकर।
माटी की है देह, भस्म हो जाए जलकर।।

52

काम-क्रोध

काम, क्रोध, मद, लोभ से, रहना हरदम दूर।
करके अच्छे काम को, होते सब मशहूर।।
होते सब मशहूर, कभी नफरत मत पालो।
बाँटो हरपल प्यार, फूट को कभी न डालो।।
कह राधेगोपाल, रहो तुम सदा बोध में।
हो जाता नुकसान, हमेशा काम-क्रोध में।।

53

तांडव

तांडव क्यों करने लगा, अब कलयुग का काल।
बच्चे अब होते बड़े, वृद्ध हो गए बाल।।
वृद्ध हो गए बाल, अरे वो जब समझाते।
बच्चे सुनने बात, कभी भी पास न आते।।
कह राधेगोपाल, रहे थे कैसे पांडव।
कलयुग का है काल, करे अब क्यों है तांडव।।

54

सुख दुख

सुख-दुख जीवन में सदा, आते एक समान।
सुख जल्दी से बीतता, दुख लाता व्यवधान।।
दुख लाता व्यवधान, झलकती पीड़ा भारी।
भगवन करते दूर, सखी सब पीर तुम्हारी।।
कह राधेगोपाल, तसल्ली रक्खो मन में।
आते रहते पास, अरे सुख-दुख जीवन में।।

55

कुल्हाड़ी

कुल्हाड़ी का तुम कभी, मत करना उपयोग।
पेड़ बिना तो जगत में, बढ़ जाएँगे रोग।।
बढ़ जाएँगे रोग, उगाओ पेड़ धरा पर।
सूखी बंजर भूमि, अरे तू हरा-भरा कर।।
कह राधे गोपाल, बोलती सदा पहाड़ी।
पेड़ बचा लो मित्र, फेंककर दूर कुल्हाड़ी।।

56

बढ़ो बिटिया

बिटिया तुम आगे बढ़ो, पड़ो नहीं कमजोर।
आगे बढ़ने के लिए, श्रम कर लो पुरजोर।।
श्रम कर लो पुरजोर, बनो तुम सबकी प्यारी।
नर से निकली आज, अरे आगे अब नारी।।
कह राधेगोपाल, भाग तो उनके हैं जागे।
जिस घर तेरा वास, बढ़ो बिटिया तुम आगे।।

57

आशीष

मन से तो मिटती नहीं, पिता आपकी याद।
कैंसे अब देखूँ तुम्हे, मन करता फरियाद।।
मन करता फरियाद, देख लूँ पापा तुमको।
दे देना आशीष, हमेशा आकर हमको।।
कह राधेगोपाल, हरो रोगों को तन से।
जाती है नहीं याद, पिताजी मेरे मन से।।

58

आई कैसी आपदा

आई कैसी आपदा, भारत में तो आज।
हाथ मिलाने से बढे, करो अकेले काज।।
करो अकेले काज, अकेले ही तुम रहना।
डोज इसको मात, यही है सबका कहना।।
कह राधेगोपाल, नहीं है बनी दवाई।
सकल हिन्द में आज, ये कैसी विपदा आई।।

59

धन दौलत बेकार

माता-पिता के सामने, धन दौलत बेकार।
बच्चों तुम हरदम करो, जग में सबसे प्यार।।
जग में सबसे प्यार, सदा हो धर्म हमारा।
होगा हिंदुस्तान, जगत में सबसे न्यारा।।
कह राधेगोपाल, बड़ो संग समय बिता के।
बनकर राजकुमार, रहो तुम मात पिता के।।

60

मजदूरी

मजदूरी करके करें, घर का पूरा काम।
नौकर को मिलता नहीं, कभी यहाँ विश्राम।।
कभी यहाँ विश्राम, नहीं करना तुम राधे।
जग में करना काम, सभी तुम सीधे साधे।।
कह राधेगोपाल, गरीबी है मजबूरी।
करते हैं इंसान, धरा पर सब मजदूरी।।

61

फूल खिले हैं

फूल खिले हैं डाल पे, महक उठा है बाग।
बैठ डाल पर आम की, कोयल गाती राग।।
कोयल गाती राग, भ्रमर तितली भी डोले।
आओ रस लो बाँट, मधुमक्खी भी बोले।।
कह राधेगोपाल, पथिक को शूल मिले हैं।
आओ देखो बाग, डाल में फूल खिले हैं।।

62

सड़कों का हाल

बदतर अब होने लगा, है सड़कों का हाल।
पैदल जो भी चल रहे, वो होते बेहाल।।
वो होते बेहाल, सड़क ढूँढे फिरते हैं।
गड्ढों में है पैर, तभी तो वह गिरते हैं।।
कह राधेगोपाल, रहोगे कब तक घर पर।
सड़कों का अब हाल, हुआ है बद से बदतर।।

63

गाड़ी का टायर

गाड़ी का टायर कहे, हम होते बेहाल।
देख अचंभित हो रहे, हैं सड़कों का हाल।।
है सड़कों का हाल, दुखी है जनता सारी।
सड़क बने हैं ताल, अरे कैसी लाचारी।।
कह राधेगोपाल, कहेगा कुछ तो शायर।
पक्चर होता जाय, सदा गाड़ी का टायर।।

64
बिंदी

बिंदी से शोभा बढे, नारी की भरपूर।
नथनी कहती झूमके, मत जाओ तुम दूर।।
मत जाओ तुम दूर, सजन से कहती सजनी।
रहना हरदम पास, दिवस हो चाहे रजनी।।
कह राधेगोपाल, पहाड़ी हो या सिंधी।
चमके सबके भाल, हमेशा प्यारी बिंदी।।

65
संकट में है विश्व

विपदाओं का है कहर, सकल विश्व में आज।
कोरोना के रोग ने, रोके सारे काज।।
रोके सारे काज, हिल गई दुनिया सारी।
भूख प्यास से त्रस्त, बड़ी है यहाँ बीमारी।।
कह राधेगोपाल, सभी को आप बताओ।
संकट में है विश्व, रोग तुम नहीं सताओ।।

66
मानव

मानव मानव का रखे, जब तक जग में ध्यान।
तब तक जीवन में नहीं, आएंगे व्यवधान।।
आएंगे व्यवधान, भूख से मरे न कोई।
काटोगे तुम फसल, हमेशा जो है बोई।।
कह राधेगोपाल, बनो मत कोई दानव।
काम सदा आते हैं, मानव के ही मानव।।

67

छुआछूत का रोग

करते हैं सब बात ही, कोरोना की आज।
छुआछूत का रोग है, रोक रहा है काज।।
रोक रहा है काज, बिठाया सबको घर में।
खाँस खाँस दिन रात, दर्द होता है सर में।।
कह राधेगोपाल, रोग से वो सब मरते।
सुन कर भी जो बात, अरे अनदेखी करते।।

68

दहशत

दहशत में है आज सब, बैठे हैं निजधाम।
कोरोना है रोकता, अब तो सबके काम।।
अब तो सबके काम, द्वार को बंद कराया।
अपनों से ही आज, सभी को किया पराया।।
कह राधेगोपाल, घरों में कर लो कसरत।
रोग मिटेगा वही, शहर में जिसकी दहशत।।

69

सत्कार

हाथ जोड़ कर दूर से, कर लेना सत्कार।
कोरोना अब बदल रहा, है सबका व्यवहार।।
है सबका व्यवहार, दूर अपनों से रहना।
नमस्कार ही यहाँ, सदा तुम सब से कहना।।
कह राधेगोपाल, भीड़ को यहीं छोड़ कर।
मिलो सभी से आप, सदा ही हाथ जोड़कर।।

70
राधा राधा

राधाराधा बोलिए, बहे प्रेम की धार।
मोहन जब आकर मिले, मिला जीवनाधार।।
मिला जीवनाधार, कहो सब राधे राधे।
राधे ने तो यहाँ, सभी के दुख है साधे।।
कह राधेगोपाल, हरे वह सब की बाधा।
कहते रहना आप, जुबां से राधा राधा।।

71
चाँदनी

चमके चम चम चाँदनी, देखो मेरे द्‍वार।
आज आ रहे हैं सखी, मेरे राजकुमार।।
मेरे राजकुमार, नजर माँ अभी उतारे।
गोद बिठाकर लाल, अरे अब उसे सवाँरे।।
कह राधेगोपाल, आज तो घर भी दमके।
आंगन बगिया आज, देखलो सब है चमके।।

72
गरम दूध

हल्दी पीलोघोल के, गरम दूध में आप।
ताकत तो तन को मिले, मत समझो अभिशाप।।
मत समझो अभिशाप, जख्म को भरता जाए।
कैसा भी हो रोग, कभी भी पास ना आए।।
कह राधेगोपाल, कहो मत जल्दी जल्दी।
स्वस्थ रहोगे आप, दूध में घोलो हल्दी।।

73

निर्धन की बेटी

माँ बेटी के साथ में, करती हँस के बात।
शीत मगर है दे रही, बेटी को आघात।।
बेटी को आघात, मिली कैसी लाचारी।
निर्धन सेके ताप, बचाए बिटिया प्यारी।।
कह राधेगोपाल, पिता के सर है पेटी।
आग जलाकर खेल, रही निर्धन की बेटी।।

74

नटखटराधिका

नटखट सी है राधिका, चंचल से दो नैन।
रास रचाते कृष्ण जब, हो जाते बेचैन।।
हो जाते बेचैन, राधिका उन्हें सुहाती।
कृष्णा से तो प्रीत, अरे वो सदा निभाती।।
कह राधेगोपाल, नहीं वो करती खटपट।
चंचल से दो नैन, राधिका लगती नटखट।।

75

आया प्रियतम द्वार

थाली दीपक से सजी, लेकर बैठी द्वार।
सैनिक घर को आ रहा, खुश होती है नार।।
खुश होती है नार, नैन भी उसके डोले।
आया प्रियतम द्वार, सखी से वह तो बोले।।
कह राधेगोपाल, पुष्प ले आई आली।
जगमग है घर बार, सजी दीपक से थाली।।

76

सरसों

सरसों जब पकने लगे, खिलते पीले फूल।
छोटे से दाने हुए, संग नहीं है शूल।।
संग नहीं है शूल, अरे जब बालक आए।
लूटे सभी पतंग, पाँव से इन्हें दबाए।।
कह राधेगोपाल, बचपना बीता परसों।
खिलते पीले फूल, पके जब लाही सरसों।।

77

धर्म न करें अंधेरा

तेरा मेरा भाव ही, करता है बेचैन।
सब मिलकर रह लीजिए, यहाँ दिवस व रैन।।
यहाँ दिवस व रैन, हिंद तो है हम सबका।
दिखते सारे धर्म, हमें तो मंदिर तबका।।
कह राधेगोपाल, धर्म न करें अंधेरा।
मन होगा बेचैन, करो गर तेरा मेरा।।

78

धड़कन

धड़कन में तुम हो बसे, ओ मेरे मनमीत।
तुमने हर दम ही लिया, मेरे मन को जीत।।
मेरे मन को जीत, किया है मुझको पागल।
चोरी करके नींद, किया है हरदम घायल।।
कह राधेगोपाल, समझलो मेरी फडकन।
ओ मेरे मन मीत, तुम्हीं से मेरी धड़कन।।

79

हिंद की शान

करते हैं जो देश पर, जीवन को कुर्बान।
उनका तो बलिदान ही, बने हिंद की शान।।
बने हिंद की शान, चमकते बनकर तारे।
करें देशहित काम, यहाँ पर बच्चे सारे।।
कह राधेगोपाल, देश पर जो है मरते।
जीवन को कुर्बान, देश पर वो ही करते।।

80

नारी

नारी अब अबला नहीं, उस पर सबको नाज।
वह तो नित ही कर रही, जग के सारे काज।।
जग के सारे काज, उसे हैं बहुत लुभाते।
करती सदा विचार, सदा ही आते जाते।।
कह राधेगोपाल, अरे वह सब पर भारी।
जग मैं करती राज, अरे बन सबला नारी।।

81

डोरी

डोरी साँसों की रही, है जीवन आधार।
इससे ही तो जगत की, नैया होती पार।।
नैया होती पार, बहुत गहरा है सागर।
लेकर ईश्वर नाम, भरो तुम अपनी गागर।।
कह राधेगोपाल, कल्पना नहीं ये कोरी।
जीवन का आधार, यहाँ साँसों की डोरी।।

82

लेने

लेने तुम आशीष को, मन में रखना चाह।
मंजिल पाने के लिए, पकड़ो सच्ची राह।।
पकड़ो सच्ची राह, दिखे चहुँ ओर उजाला।
करता उल्टी बात, वही जो मन का काला।।
कह राधेगोपाल, ख़ुशी सबको ही देने।
मन में रखना चाह, तुम आशीष को लेने।।

83

परिणय

परिणय में जब से बँधे, हैं राधेगोपाल।
खाते गाते झूमते, बीत रहे हैं साल।।
बीत रहे हैं साल, बनी है कैसी जोड़ी।
रहते हैं खुशहाल, लड़ाई करते थोड़ी।।
दुनिया देती आज, सभी को उनका परिचय।
बँधें प्रेम की डोर, अरे जब होता परिणय।।

84

हाथ जोड़ कर

हाथ जोड़ कर बोलती, राधा सबसे आज।
घर में ही तुम बैठ कर, कर लो अपने काज।।
कर लो अपने काज, भीड़ में मत तुम जाना।
पका हुआ तुम भोज, अरे घर में मत लाना।।
कह राधेगोपाल, रुख अपना यूँ मोड़ के।
दूर करो संक्रमण, कहे वो हाथ जोड़ के।।

85

हँसना

हँसने के लगते नहीं, जग में कोई दाम।
हँस करके ही कीजिए, अपने सारे काम।।
अपने सारे काम, करो मत हेरा फेरी।
रिश्तो में तो आप, करो मत तेरा मेरी।।
कह राधेगोपाल, सांप होता है डसने।
जग में कोई दाम, नहीं लगता है हँसने।।

86

आँखों

आँखों में तो है बसी, पिया तुम्हारी छाप।
जाकर के परदेस को, भूल गए क्या आप।।
भूल गए क्या आप, नहीं अब याद सताती।
बिरहन रोती हाय, अरे वह कह नहीं पाती।।
कह राधेगोपाल, दिखे इंसा तो लाखों।
आती-जाती याद, बसी है मेरी आँखों।।

87

जीवन

जीवन रूपी आग में, जलते रहते लोग।
कुछ तो करते हैं यहाँ, पल पल का उपयोग।।
पल पल का उपयोग, करो बन कर संसारी।
बन जाएगी मीत, यहाँ पर दुनिया सारी।।
कह राधेगोपाल, दुखों का करना सीवन।
हँसते गाते सदा, बिताओ अपना जीवन।।

88

तिनका

तिनका तिनका जोड़ के, बयां बनाए नीड़।
लेकिन पक्षी की नहीं, कोई समझे पीड़।।
कोई समझे पीड़, जोड़ती तिनके सारे।
पाल रही है बाल, मगर वह कभी न हारे।।
कह राधेगोपाल, कौन सा नीड़ है किनका।
बने घोंसला अरे, जोड़कर तिनका तिनका।।

89

वादा

वादा करने के लिए, पहले करो विचार।
करो साथ फिर बैठकर, बातें दो से चार।।
बातें दो से चार, करो आपस में मिलकर।
करना वादा आप, सदा ही सोच समझकर।।
कह राधेगोपाल, रखो तुम नेक इरादा।
पूरा करना अरे, सदा जो करते वादा।।

90

आया

आया है अब बाग में, शीतल मृदुल बसंत।
मेरे तो परदेस को, गए हुए हैं कंत।।
गए हुए हैं कंत, न जाने कब आएंगे।
मुझको ये मधुमास, सखी कैसे भाएंगे।।
कह राधेगोपाल, मुझे तो कुछ ना भाया।
शीतल मृदुल बसंत, धरा पर जब से आया।।

91

गागर

गागर जब जल से भरी, ठंडा होता नीर।
शीतलता हरती सदा, जग में सबकी पीर।।
जग में सबकी पीर, कभी क्रोधित मत होना।
धरना हरदम धीर, कभी आपा मत खोना।।
कह राधेगोपाल, भरो गागर में सागर।
ठंडा शीतल नीर, सदा देता है गागर।।

92

शीतल वाणी

शीतल वाणी से करो, राधे सबसे बात।
कटुक वचन मत बोल कर, पहुँचाना आघात।।
पहुँचाना आघात, अरे तुम मीठा बोलो।
पहले करो विचार, अरे फिर मुँह को खोलो।।
कह राधेगोपाल, चमक जाता है पीतल।
क्रोध घृणा को छोड़, करो वाणी को शीतल।।

93

वीणा की तान

मोहक मनभावन सरल, है वीणा की तान।
गायक की बनती सदा, इससे ही पहचान।।
इससे ही पहचान, मृदुल सा लगता गाना।
गीत और संगीत, बनाते ताना-बाना।।
कह राधेगोपाल, खुशी का बनना दोहक।
होते सुर लय तान, जगत में सबसे मोहक।।

94

सरहद

सरहद पर रहते खड़े, कितनी माँ के लाल।
देश प्रेम उनमें भरा, करते सदा कमाल।।
करते सदा कमाल, कड़क हो कितना जाड़ा।
हिमगिर जाए यहाँ, अरे हो महँगा भाड़ा।।
कह राधेगोपाल, हो रहे हरदम गदगद।
कितनी माँ के लाल, खड़े रहते हैं शरहद।।

95

वाणी

वाणी में संयम रखो, रखना शुद्ध विचार।
हँसने से मिलती यहाँ, जीवन में पतवार।।
जीवन में पतवार, सदा जो पार है करती।
दुखड़े करती दूर, खुशी से जीवन भरती।।
कह राधेगोपाल, भला लगता वो प्राणी।
करता सबसे बात, रखे जो मीठी वाणी।।

96

फूलों का उपहार

चंपा की कलियाँ खिली, झूम रहा कचनार।
बगिया सबको दे रही, फूलों का उपहार।।
फूलों का उपहार, बाग तो सबको बाँटे।
फूलों के तो साथ, रहे हैं हरदम काँटे।।
कह राधेगोपाल, चलो मिलकर सब सखियाँ।
खिली हुईं है आज, सभी चंपा की कलियाँ।।

97

कोरोना

कोरोना के नाम से, फैला कैसा रोग।
सर्दी और जुकाम है, कहते सारे लोग।।
कहते सारे लोग, आ गई विपदा भारी।
खाँसी करते अरे, यहाँ पर सब नर नारी।।
कह राधेगोपाल, अरे तुम भी बोलोना।
फैला कैसा रोग, नाम इसका कोरोना।।

98

अर्णव कलश

दिवस अवतरण" का दिखा, अर्णव कलश महान।
समूह की दो नार भी, पाती है सम्मान।।
पाती है सम्मान, सिखा कर विविध विधाएं।
आकर सर विज्ञात, सभी को नियम बताएं।।
कह राधेगोपाल, दीजिए सबको विवरण।
अर्णव कलश का आया, अरे दिवस अवतरण।।

99

झगड़ा

झगड़ा तुम करना नहीं, मत देना आघात।
ईश्वर ने मुख है दिया, करना मीठी बात।।
करना मीठी बात, समझ कर सब कुछ कहना।
कोमल निर्मल बोल, बने हैं मन का गहना।।
कह राधेगोपाल, जीतता हरदम तगड़ा।
मत देना आघात, कभी मत करना झगड़ा।।

100

देखो साजन

देखो साजन अब मुझे, खोल झरोखा आज।
अपनी अठखेलियों से, कभी न आते बाज।।
कभी न आते बाज, बने वो ही हमजोली।
करते हरदम बात, करें वो हँसी ठिठोली।।
कह राधेगोपाल, ठाट है जैसे राजन।
चुपके से तो आज, हमें तो देखो साजन।।

राधा तिवारी "राधेगोपाल"

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

नाम- **राधा तिवारी 'राधेगोपाल'**
जन्म- २७ सितम्बर, जोधपुर (राजस्थान)
पिताजी- डॉ.भोला दत्त पांडेय
माताजी- श्रीमती आनंदी पांडेय
पति- श्री गोपाल दत्त तिवारी
बच्चे- स्वाति (पुत्री), युगल (पुत्र)
पता - मुकाम खटीमा, ब्लॉक- खटीमा, जिला- ऊधमसिंह नगर, (उत्तराखण्ड)
शिक्षा- एम.ए.(अंग्रेजी), बी.एड.
कार्य- शिक्षण (अंग्रेजी अध्यापिका) रा.उ.मा. विद्यालय सबौरा (खटीमा)

साहित्य सृजन- दोहा, गजल, गीत, कविता, बाल कविता ,भजन ,मुक्तक , कुण्डलियाँ, हाइकु, चौपाइयाँ. घनाक्षरी, सवैया, लघुकथाएँ आदि।

विधा- गद्य-पद्य

प्रकाशित पुस्तकें- १. जीवन का भूगोल (दोहा संग्रह), २. सृजन कुंज (कविता संग्रह), ३. राधे की अंजुमन (गजल संग्रह), ४. राधे की कुण्डलियां (कुंडलियां)

साझा संग्रह- १. जहाँ मिले धरती आकाश, २. ये दोहे बोलते हैं (दोहा संग्रह), ३. गुंजन (हाइकु संग्रह), ४. ये कुंडलियाँ बोलती है (कुंडलियां संग्रह), ५. गीत गूंजते से, ६. काव्यांगन

प्रकाशनाधीन- सात पुस्तकें

सम्मान- १४ सितंबर ९६ 'हिंदी पर विशेष योगदान सम्मान','युवा प्रतिभा सम्मान २०१७', 'नव सप्तक साहित्य सम्मान २०१७', 'साहित्य श्री २०१८', 'ब्लॉग श्री २०१८', 'साहित्य कुमुद सम्मान २०१९', Women Empowerment Award 2019, 'दोहा रत्न सम्मान', 'दोहा सृजक कलम सम्मान', 'दोहा विशारद', 'कलम काव्य गौरव सम्मान २०१९', 'दोहा रत्न', 'काव्य कलश', 'काव्य गौरव सम्मान', 'दोहा रत्न सम्मान', 'अल मँसूर सम्मान', 'श्रेष्ठ सृजन सम्मान', 'साहित्य सम्मान', 'शहीद भगतसिंह सम्मान २०२०', 'हौसलों की उड़ान २०२०', 'काव्य सौंदर्य सम्मान', ऑनलाइन कवि सम्मेलन 'सहभागिता सम्मान', 'साहित्य शिल्पी सम्मान', 'संचालन प्रमाण पत्र', 'साहित्य साधक सम्मान २०२०', 'अक्षय काव्य सहभागिता सम्मान', 'प्रतिभाग सम्मान पत्र','दोहा विशारद सम्मान', 'मातृ दिवस सम्मान', 'बहुविधा सृजन सम्मान',

सामाजिक- दीन-दुखियों की सेवा में सदैव तत्पर।

उद्देश्य- स्वान्तः सुखाय

सम्पर्क- फोन नं.-9997771969, व्हाट्स एप नं. -9997771969
e mail - radhatiwari1968@gmail-com

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-226-5
मूल्य 90/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/